4

छायावादी काव्य
(निराला और जयशंकर प्रसाद)

हिंदी में लगभग 1918 से 1936 तक के बीच के काव्य की मुख्यधारा को 'छायावाद' के नाम से जाना जाता है। 'छायावाद' शब्द का प्रयोग सबसे पहले कवि मुकुटधर पांडेय ने अपने एक आलेख में किया था जिसका शीर्षक था– 'हिंदी में छायावाद'। अनेक विद्वानों ने छायावाद को स्वच्छंदतावाद भी कहा है। हिंदी की छायावादी काव्यधारा मुख्य रूप से रीतिकाल की घोरश्रृंगारिकता एवं द्विवेदीयुगीन काव्य की सपाट उपदेशात्मक एवं वर्णनात्मक प्रवृत्ति के विरुद्ध एक प्रतिक्रिया के रूप में आई। यह कविता अंग्रेजी के 'रोमांटिक' एवं बांग्ला के स्वच्छंदतावादी काव्य से भी काफी हद तक प्रभावित हुई थी। सबसे महत्वपूर्ण बात यह है कि पूरा छायावादी काव्य भारत के स्वाधीनता आंदोलन और मुख्य रूप से गाँधी–युग में लिखा गया है। यही कारण है कि छायावादी कविता में एक ओर जहाँ व्यक्ति–स्वातंत्र्य की चेतना है तो दूसरी ओर राष्ट्र स्वातंत्र्य की। इसके अतिरिक्त छायावाद प्रेम, सौंदर्य, प्रकृति–संवेदना, राष्ट्रीय जागरण एवं मानवतावाद का काव्य है। जयशंकर प्रसाद, सुमित्रानंदन पंत, सूर्यकांत त्रिपाठी 'निराला' और महादेवी वर्मा छायावाद के चार स्तंभ हैं।

उद्देश्य

इस पाठ को पढ़ने के बाद आप

- श्रमिकों की कठिन जीवन–परिस्थितियों पर टिप्पणी कर सकेंगे;
- समाज में फैली विषमता का विवेचन कर सकेंगे;
- निराला की कविता के भाव–सौंदर्य का वर्णन कर सकेंगे;
- निराला की कविता की भाषा–शैली और शिल्प–सौंदर्य पर टिप्पणी कर सकेंगे;

- परायीन भारत में देशवासियों के भीतर उठ रही स्वतंत्रता की आकांक्षाओं की पहचान कर प्रस्तुत कर सकेंगे;
- प्रसाद की कविता की भावगत विशेषताओं पर टिप्पणी कर सकेंगे;
- प्रसाद की कविता के शिल्प-सौंदर्य पर टिप्पणी कर सकेंगे;
- प्रसाद की प्रसाद की राष्ट्रीय चेतना का वर्णन कर सकेंगे।

(क) सूर्यकांत त्रिपाठी 'निराला'

हिंदी साहित्य में सूर्यकांत त्रिपाठी 'निराला' का महत्वपूर्ण स्थान है। निराला जिस युग में कविता लिख रहे थे, उस युग में भारतीय समाज अनेक प्रकार के सामाजिक-आर्थिक परिवर्तनों से गुज़र रहा था। आर्थिक असमानता के कारण होने वाले शोषण को देखकर निराला बहुत बेचैन होते थे। उनकी अनेक रचनाओं में यह बेचैनी और पीड़ा झलकती है। 'वह तोड़ती पत्थर' कविता में एक श्रमिक स्त्री के संघर्ष का चित्रण किया गया है। कवि उस श्रमिक स्त्री के प्रति संवेदनशील हैं और हमें भी ऐसी स्थितियों के प्रति संवेदनशील बनाते हैं। इस कविता को समानुभूति से उपजी कविता भी कहा जा सकता है।

चित्र 4.1 : निराला

4.1 मूल पाठ

चित्र 4.2 : पत्थर तोड़ती महिला

वह तोड़ती पत्थर

वह तोड़ती पत्थर;
देखा उसे मैंने इलाहाबाद के पथ पर –
वह तोड़ती पत्थर।

कोई न छायादार
पेड़ वह जिसके तले बैठी हुई स्वीकार;
श्याम तन, भर बँधा यौवन,
नत नयन, प्रिय-कर्म रत मन,
गुरु हथौड़ा हाथ,
करती बार-बार प्रहार –
सामने तरु-मालिका अट्टालिका, प्राकार।

चढ़ रही थी धूप;
गर्मियों के दिन
दिवा का तमतमाता रूप;
उठी झुलसाती हुई लू,

रुई ज्यों जलती हुई भू,
गर्द चिनगीं छा गयीं,
प्राय: हुई दुपहर –
वह तोड़ती पत्थर।

देखते देखा मुझे तो एक बार
उस भवन की ओर देखा, छिन्नतार;
देखकर कोई नहीं,
देखा मुझे उस दृष्टि से
जो मार खा रोयी नहीं,
सजा सहज सितार,
सुनी मैंने वह नहीं जो सुनी थी झंकार
एक क्षण के बाद वह काँपी सुघर,
ढुलक माथे से गिरे सीकर,
लीन होते कर्म में फिर ज्यों कहा –
'मैं तोड़ती पत्थर!'

टिप्पणी

शब्दार्थ

नत-नयन	-	झुकी आँखें
गुरु	-	भारी
तरुमालिका	-	पेड़ों की पक्तियाँ
अट्टालिका	-	ऊँचे भवन
प्राकार	-	परकोटा, प्राचीन
दिवा	-	दिन
लू	-	तेज गर्म हवा
भू	-	पृथ्वी, ज़मीन
गर्द-चिनगीं	-	चिंगारी जैसे धूल के कण
छिन्नतार	-	तारों की झनकार
सुघर	-	सुडौल देहवाली
सीकर	-	पसीने की बूँदें

बोध प्रश्न 4.1

सर्वाधिक उपयुक्त विकल्प चुनकर पूछे गए प्रश्नों के उत्तर दीजिए:

1. श्रमिक स्त्री को क्या प्रिय है–

   (क) गुरु हथौड़ा (ख) मन

   (ग) कर्म (घ) प्रहार

2. कविता में किस प्रकार के मौसम का वर्णन है–

   (क) ग्रीष्म का (ख) शिशिर का

   (ग) वर्षा का (घ) वसंत का

3. पत्थर तोड़ने वाली जहाँ बैठी थी, उसके सामने किसका दृश्य है–

   (क) अट्टालिकाओं का (ख) जलती हुई धरती

   (ग) छायादार पेड़ का (घ) इलाहाबाद के पथ का

4.2 आइए समझें

अंश-1

वह तोड़ती पत्थर ...... अट्टालिका, प्राकार।

प्रसंग

कविता पढ़कर आप पहले जान चुके हैं कि यह एक श्रमिक नारी पर लिखी गई है, जो सड़क

अंश-1

वह तोड़ती पत्थर;
देखा उसे मैंने इलाहाबाद के पथ पर-
वह तोड़ती पत्थर।
कोई न छायादार
पेड़ वह जिसके तले बैठी हुई
स्वीकार,
श्याम तन, भर बँधा यौवन,
नत नयन, प्रिय-कर्म-रत मन,
गुरु हथौड़ा हाथ,
करती बार-बार प्रहार -
सामने तरु-मालिका, अट्टालिका,
प्राकार।

के किनारे पत्थर तोड़ रही है। कवि ने उसे इलाहाबाद की किसी सड़क पर काम करते देखा है। उसी का चित्र उन्होंने यहाँ खींचा है।

व्याख्या

इलाहाबाद की किसी सड़क पर काम में लगी एक श्रमिक महिला को देखकर निराला जी ने लिखा है कि वह जिस पेड़ के नीचे बैठी काम में लगी है, वह कोई छायादार पेड़ नहीं है, जो उसे गरमी की प्रखरता से, उसकी तेज़ी से बचा सके। पर उसे इस स्थिति से कोई शिकायत नहीं है, वह तो इस स्थिति को स्वीकार कर रही है। सोचिए क्यों ? क्योंकि वह जानती है कि जब कठिन श्रम करना है तो अनुकूल परिस्थितियों की कल्पना ही व्यर्थ है।

कवि की दृष्टि पहले श्रमिक महिला के शारीरिक रूप-सौंदर्य की ओर जाती है। उसका शरीर साँवला है। यह साँवलापन श्रम का प्रतीक है। साथ ही हमारे देश में रहनेवाले अभावग्रस्त, शोषित आमजन की ओर संकेत करता है। वस्तुत:, धूप में काम करने वाले श्रमिकों का रंग धूप में साँवला पड़ ही जाता है। वह युवती है उसका अपने यौवन पर नियंत्रण है। गंभीर है, उच्छृंखल नहीं है। उसकी आँखें झुकी हैं। उसका मन भी काम पर पूर्ण तन्मयता से लगा है। कर्म उसे प्रिय है। हाथ में भारी हथौड़ा लेकर वह बार-बार पत्थरों पर चोट कर रही है। उन्हें तोड़ रही है।

इसके बाद कवि परिवेश की परस्पर-विरोधी स्थिति का चित्रण कर रहा है। वह कहता है जहाँ एक ओर वह मज़दूरनी गरमी में छायाहीन वृक्ष के नीचे काम कर रही है - वहीं उसके एकदम सामने के परिवेश से संपन्नता और सुख-सुविधा झलक रही है। वहाँ सुंदर सजावटी वृक्षों की पंक्तियाँ हैं, विशाल ऊँचे भवन हैं और उनके चारों ओर सुंदर दीवारें हैं। कविता की इन पंक्तियों में यह संकेत स्पष्ट है कि वह संभ्रांत नागरिकों की बस्ती है। वे लोग सुख-सुविधाओं के बीच अट्टालिकाओं में परकोटों से घिरे बैठे हैं और आस-पास की परिस्थितियों से बेखबर अपने आप में सिमटे हुए हैं, जबकि उन भवनों का निर्माण करने वालों को मौसम की मार से बचने की सुविधा तक नहीं है।

टिप्पणी

1. उपर्युक्त पंक्तियों में कविता का सामान्य अर्थ बताया गया है। आप जानते हैं कि 'निराला' सिद्ध कवि हैं। वे शब्दों और वर्ण्यवस्तु का चयन विशेष आशय से करते हैं; जैसे- इन्हीं पंक्तियों में देखिए : *''कोई न छायादार/पेड़ वह जिसके तले बैठी हुई स्वीकार; श्याम तन, भर बँधा यौवन/नत नयन, प्रिय-कर्म-रत मन''*।

2. आप जानते हैं कि हम सर्वनाम का प्रयोग तब करते हैं जब पहले संज्ञा का प्रयोग कर चुके होते हैं। यहाँ कवि ने कविता का प्रारंभ 'वह' सर्वनाम से किया है, पूरी कविता में 'वह' के लिए कोई नाम भी नहीं है। बता सकते हैं ऐसा क्यों है ? कवि यदि चाहता तो मज़दूरनी के लिए कोई नाम भी दे सकता था। पर नाम न देकर वह व्यक्त करना चाहता है कि यह बात किसी एक श्रमिक विशेष पर नहीं, श्रमिक सामान्य पर अर्थात् सभी श्रमिकों पर लागू होती है। किसी भी सड़क के किनारे पत्थर तोड़ने वाली मजदूरनी की कठिनाई और कार्य परिस्थितियाँ एक-सी हैं। इस प्रकार नाम महत्वपूर्ण नहीं, महत्वपूर्ण है उसका काम- अर्थात् 'पत्थर तोड़ना'। कवि प्रारंभ के वाक्य में ही कहता है – 'वह तोड़ती पत्थर'

3. यहाँ व्यक्ति का नाम न देने वाला कवि सड़क की पहचान के लिए नाम देता है – *'देखा मैंने उसे इलाहाबाद के पथ पर'* यहाँ आप पूछ सकते हैं कि नाम न देने से क्या अर्थ अधिक व्यापक नहीं होता ? यहाँ 'पथ पर' के साथ इलाहाबाद नाम देकर उसने इस घटना को सच्चा और प्रामाणिक बताना चाहा है। जैसे कहना चाहता हो 'यह एक सच्ची घटना' है और वह इस घटना का साक्षी है। सभी कुछ उसके सामने हुआ है। यह इलाहाबाद की देखी हुई घटना है।

4. अगले कथन में 'स्वीकार' के प्रयोग पर ध्यान दीजिए। जहाँ बैठकर वह काम कर रही है, वह जगह छायादार नहीं है। पर उसे यह स्थिति स्वीकार है। यहाँ कवि का आशय है कि मज़दूर जिन परिस्थितियों में काम कर रहे हैं, वे उनके अनुकूल नहीं हैं, प्रतिकूल हैं। पर वे इन प्रतिकूल परिस्थितियों के होते हुए भी कोई बखेड़ा खड़ा नहीं कर रहे हैं, बल्कि उन्हें स्वीकार कर काम करते रहते हैं।

5. अगली दो पंक्तियाँ देखिए :

   श्याम तन, भर बँधा यौवन,
   नत नयन, प्रिय-कर्म-रत मन,

   'साँवले रंग का शरीर, बँधे परिपुष्ट अंगों से झलकता यौवन' कथन से स्पष्ट है कि वह श्रमिक महिला सुंदर है। पर उसकी आँखों में कोई शृंगार या उच्छृंखलता का भाव नहीं है। आँखें झुकी हैं, जो उसके शील स्वभाव को व्यंजित कर रही हैं। युवती के प्रसंग में कवि प्रायः उसके प्रिय का उल्लेख करते हैं, जिस पर उसका मन हो। यहाँ भी कवि उसके प्रिय का उल्लेख करता है, पर यह प्रिय कोई व्यक्ति नहीं, वह है कर्म- पत्थर तोड़ने का काम, उसी पर उसका मन है, उसी पर उसकी आँखें। इसलिए कहा है – *'नत नयन, प्रिय-कर्म-रत मन।'*

6. अब इन तीन पंक्तियों को पढ़िए :

   'गुरु हथौड़ा हाथ

करती बार-बार प्रहार
सामने तरु-मालिका अट्टालिका, प्राकार।

इसका अर्थ आप पीछे पढ़ चुके हैं। देखना यह है कि इस प्रसंग में कवि उसके सामने तरुमालिका, अट्टालिका और प्राकार का उल्लेख क्यों कर रहा है? निराला ने इस पंक्ति के द्वारा परिवेश की विडंबना को साकार किया है। एक ओर भीषण गरमी में सड़क पर पत्थर तोड़ती औरत और दूसरी ओर सुंदर सजावटी वृक्षों की पंक्तियों से सजे परकोटों से घिरे बड़े-बड़े महल। कवि का उद्देश्य परिवेश के विरोध और विडंबना को साकार करना ही नहीं है, वह कहता है *'गुरु हथौड़ा हाथ, करती बार-बार प्रहार'*। वह हाथ में भारी हथौड़ा लेकर बार-बार प्रहार कर रही है, पत्थरों पर ही नहीं, बल्कि सामने उन तरुमालिका, अट्टालिका और प्राकारों की सुविधाओं का भोग करने वाले, वहाँ रहने वाले उन सभी लोगों पर और साथ ही साथ उस व्यवस्था पर भी जहाँ शोषित मज़दूर प्रतिकूल परिस्थितियों में काम करते हैं और शोषक उनसे बेखबर होकर सुख-सुविधाओं में जीते हैं।

पाठगत प्रश्न 4.1

सर्वाधिक उपयुक्त विकल्प चुनकर निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर दीजिए :

1. कवि ने मज़दूरनी के लिए 'वह' सर्वनाम का प्रयोग किया है, क्योंकि-

   (क) उसका कोई नाम नहीं है।

   (ख) कवि उसका नाम नहीं जानता।

   (ग) वह किसी भी श्रमिक की बात हो सकती है।

   (घ) महिला के लिए 'वह' कहना ही उचित है।

2. पठित पंक्तियों में चित्रण नहीं किया गया है -

   (क) श्रमिक के कठोर श्रम का।

   (ख) काम करने की प्रतिकूल परिस्थितियों का।

   (ग) शोषक और शोषित की जीवन-शैली के अंतर का।

   (घ) युवती के उच्छृंखल शारीरिक सौंदर्य का।

अंश - 2

चढ़ रही थी धूप ..... वह तोड़ती पत्थर।

आइए, अगली आठ पंक्तियाँ पढ़ कर देखें -

टिप्पणी

व्याख्या : आप जान गए हैं कि इलाहाबाद की किसी सड़क पर तपती दोपहरी में पत्थर तोड़ती महिला के श्रम का चित्रण कवि इस कविता में कर रहा है। इन पंक्तियों में कवि कार्य की कठिनतर परिस्थितियों का चित्रण कर रहा है। दोपहर में धूप बढ़ने लगी है। गर्मियों के दिन हैं और तमतमाता सूर्य अपनी प्रचंड गरमी से सबको व्याकुल कर रहा है। यहाँ तमतमाता रूप प्रत्यक्ष में तो दिन का है पर इसे मजदूरनी के तमतमाए चेहरे से भी जोड़ा गया है। ज़रा सोचिए, गरमी के दिनों में क्या हाल होता है। गरम लू के थपेड़े तो मानो मनुष्य को झुलसा देते हैं। कवि कहता है कि इस समय धरती ऐसे तप रही है जैसे रूई अंदर ही अंदर धीरे-धीरे सुलगती जाती है। चारों ओर धूल का गुबार-सा छा गया है। गर्द का एक-एक कण चिंगारी-सा जलने लगा है। अब तो दोपहर हो आई है। दोपहर में गरमी अपने चरम पर होती है। ऐसे में भी वह मज़दूरनी सिर नीचा किए पत्थर तोड़ने के कार्य में लगी हुई है।

अंश-2

चढ़ रही थी धूप;
गर्मियों के दिन
दिवा का तमतमाता रूप;
उठी झुलसाती हुई लू,
रूई ज्यों जलती हुई भू,
गर्द चिनगीं छा गयीं,
प्रायः हुई दुपहर-
वह तोड़ती पत्थर।

टिप्पणी

1. इन पंक्तियों में 'निराला' के शब्दचयन पर ध्यान दीजिए। इस प्रसंग को वह *'चढ़ रही थी धूप'* कथन से प्रारंभ करते हैं। धूप का धीरे-धीरे चढ़ना, अंततः उसका दोपहर तक पहुँचना है - *'प्रायः हुई दुपहर'* यहाँ 'प्रायः' का प्रयोग देखिए, दीन-श्रमिकों के पास समय मापने के कोई निश्चित उपकरण नहीं होते। धीरे-धीरे चढ़ती-बढ़ती धूप जब इतनी बढ़ जाए कि धरती जलने लगे, धूप के थपेड़े असह्य हो जाएँ। गर्द-गुबार उड़ने लगे तो उन्हें लगता है कि लगभग मध्याह्न हो गया।

2. *'रुई ज्यों जलती हुई भू'* में उपमा बड़ी बेजोड़ है। रूई में लगी आग की लपटें दिखती नहीं हैं। वह धीरे-धीरे भीतर-ही-भीतर सुलगती है। धरती का भी यही हाल है। शुरू में ऐसा लगता है कि रूई में कोई आग नहीं है और न ही लपटें उठती दिखती हैं, पर गरमी की अधिकता से पता चलता है कि आग लगी हुई है।

3. ऐसा ही प्रयोग है - *'गर्द चिनगीं'*। दोपहर इतनी गरम हो जाती है कि धूल का एक-एक कण आग की चिंगारी-सा जान पड़ता है। ऐसी चिंगारियों की गर्द पूरे आसमान में छा गई है। इस प्रकार पूरे अवतरण में गरमी की प्रचंडता को अनेक प्रकार से साकार किया गया है।

पाठगत प्रश्न 4.2

सर्वाधिक उपयुक्त विकल्प चुनकर निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर दीजिए :

1. 'दिवा का तमतमाता रूप' कथन से आशय है :

   (क) दिया जगमगा रहा था।

   (ख) मजदूर क्रोध से तमतमा रहे थे।

(ग) दिन जगमगा रहा था।

(घ) सूर्य मानो आग बरसा रहा था।

2. 'रुई ज्यों जलती हुई भू' का आशय है :

(क) धरती पर आग लगी थी।

(ख) रुई धीरे-धीरे जल रही थी।

(ग) असहनीय गरमी पड़ रही थी।

(घ) धरती धीरे-धीरे सुलग रही थी।

अंश-3

देखते देखा मुझे तो एक बार
उस भवन की ओर देखा, छिन्नतार;
देखकर कोई नहीं,
देखा मुझे उस दृष्टि से
जो मार खा रोयी नहीं,
सजा सहज सितार,
सुनी मैंने वह नहीं जो सुनी थी झंकार
एक क्षण के बाद वह काँपी सुघर
ढुलक माथे से गिरे सीकर,
लीन होते कर्म में फिर ज्यों कहा-
'मैं तोड़ती पत्थर!'

अंश - 3

देखते देखा मुझे ..... 'मैं 'तोड़ती पत्थर!'

अब कविता की शेष पंक्तियाँ पुनः पढ़ लीजिए।

व्याख्या : कवि मजदूरनी को दोपहर की भीषण गरमी में काम करते हुए देख रहा था। अब मज़दूरनी ने भी देखा कि कोई उसे देख रहा है। उसे देखते हुए देखकर, उसने सामने की अट्टालिका को देखा और देखने में उसका काम करने का क्रम थोड़ा-सा विचलित हुआ। पर उसके मन में दीनता या ईर्ष्या जैसी कोई भावना नहीं उपजी। उसने कवि को ऐसी दृष्टि से देखा जिसने शोषण को सहा है, पर रोकर अपनी दीनता कभी प्रकट नहीं की। कवि को लगता है कि सितार को बजाने पर भी जो झंकार मैंने कभी नहीं सुनी थी, ऐसी झंकार मुझे उस मज़दूरनी के श्रम और उसकी स्वाभिमानी दृष्टि से सुनाई पड़ी। पलभर उसका हाथ रुक जाने पर वह सुडौल युवती काँपी, उसके माथे से पसीने की कुछ बूँदें टपक पड़ीं। इसके बाद वह पुनः काम में लग गई। उसके पुनः काम प्रारंभ करने के अंदाज़ से कवि को लगा मानो वह कह रही हो कि वह पत्थर तोड़ती है। यहाँ 'मैं तोड़ती पत्थर' का व्यंग्यार्थ यह भी है कि मैं पत्थर जैसी हृदयहीन सामाजिक व्यवस्था को तोड़ना चाहती हूँ।

टिप्पणी

1. इस पूरे प्रसंग की विशेषताओं पर आपने गौर किया होगा। इसमें बिना संवादों के भी संवादात्मकता है। केवल आँखों से ही भावों और विचारों को अभिव्यक्त किया जा रहा है। पहले कवि मज़दूरनी को देखता है, मज़दूरनी कवि को देखती है और उसके बाद उस भवन की ओर देखती है। पुनः वह कवि की ओर स्वाभिमान और अपराजेयता के भाव से देखती है। इस प्रकार, देखने का मौन ही मुखरित हुआ है। वीणा की झंकार की कल्पना भी कवि ही कर रहा है। मज़दूरनी का टूटा हृदय ही 'छिन्नतार' है। अंत में मज़दूरनी का मौन संवाद ही मुखरित हुआ है, कवि को लगता है, जैसे वह कह रही हो - *'मैं तोड़ती पत्थर'!*

2. कविता के प्रारंभ में कथन था – 'वह तोड़ती पत्थर', समाप्ति में है – 'मैं तोड़ती पत्थर' क्या इन दोनों प्रयोगों का कोई रहस्य है? हाँ, है। प्रारंभ में 'वह' सर्वनाम सामान्य मज़दूर वर्ग के लिए है और कथन कवि का है। पर अंत में 'वह' 'मैं' में बदल गया है। जो मज़दूर सामान्य का नहीं 'विशेष' का द्योतक है, ऐसे मज़दूर का जिसे सामाजिक विषमताओं का बोध है और अपने कर्त्तव्य तथा लक्ष्य का ज्ञान है। पत्थर पर हथौड़ा चलाते हुए मजदूरनी कहती है – *'मैं तोड़ती पत्थर'* अर्थात् 'मैं प्रत्यक्ष में तो सड़क के किनारे पड़े पत्थर तोड़ रही हूँ।' पर 'मैं' परोक्ष रूप से संवेदनशील समाज की विषमताओं को सह रहे अपने हृदय रूपी पत्थर को भी तोड़ रही हूँ और इस हृदयहीन पत्थर दिल सामाजिक व्यवस्था को भी तोड़ सकती हूँ।

3. 'वह तोड़ती पत्थर' कविता हमें परिश्रम करनेवाले लोगों के प्रति संवेदनशील बनाती है। यह समानुभूति से उपजी कविता है। क्यों है? आइए जानते हैं। किसी विशेष दृश्य को देखकर उससे प्रभावित होना या उसमें डूब जाना आपके साथ भी हुआ होगा। कभी-कभी ऐसा भी हुआ होगा कि किसी का दुख, यातना या कठिन संघर्ष आपको अपना दुख, यातना या कठिन संघर्ष लगा होगा। जब कभी ऐसा होता है तो वह समानुभूति कहलाता है। इस कविता में भी श्रमिक स्त्री का संघर्ष, उसकी अभावग्रस्तता कवि का अपना संघर्ष या अभावग्रस्तता बन गया है। कवि को श्रमिक स्त्री सुंदर, गंभीर लगती है तथा स्वाभिमानी भी। साथ ही कवि उसके संघर्ष से इतना प्रभावित होता है कि पत्थरों पर पड़ी चोट को शोषक-व्यवस्था पर पड़ने वाली चोट के रूप में भी देखता है। आप भी जब ऐसे लोगों को देखते होंगे तो उनके शोषण के कारणों पर ज़रूर विचार करते होंगे और मन में यह भाव आता होगा कि समाज से शोषण समाप्त हो।

पाठगत प्रश्न 4.3

सर्वाधिक उपयुक्त विकल्प चुनकर निम्नलिखित प्रश्न का उत्तर दीजिए :

1. 'देखा मुझे उस दृष्टि से जो मार खा रोई नहीं' कथन से मजदूरनी के स्वभाव की कौन-सी विशेषता अभिव्यक्त हो रही है –

   (क) दीनता   (ख) सहिष्णुता

   (ग) स्वाभिमान   (घ) पराधीनता

2. मज़दूर स्त्री के कर्म में विघ्न उत्पन्न हुआ–

   (क) गर्मी के कारण   (ख) पसीने के कारण

   (ग) काँपने के कारण   (घ) कवि द्वारा अपने को देखे जाने के कारण

4.3 भाव-सौंदर्य

'वह तोड़ती पत्थर' कविता भाव-सौंदर्य की दृष्टि से बहुत संपन्न है। सड़क पर पत्थर तोड़ती मज़दूरनी का वर्णन करते हुए कवि सरल शब्दों से परिवेश का निर्माण करता है। वह छायाहीन पेड़ तले बैठी है। उसकी पृष्ठभूमि साधारण श्रमिक परिवार की है, किंतु शील और सच्चरित्रता जैसे चारित्रिक गुणों को दिखाना भी कवि नहीं भूला है। मज़दूर और संपन्न दोनों प्रकार के लोगों का चित्रण करते हुए कवि ने परस्पर-विरोधी चित्र खींचे हैं। एक ओर कठिनतम परिस्थितियों में काम करते श्रमिक वर्ग का चित्र है तो दूसरी ओर सुख-सुविधा संपन्न भवनों में रहने वाले लोगों का। कवि की समानुभूति श्रमिक वर्ग के साथ है। वह श्रमिक-वर्ग के हाथों हृदयहीन व्यवस्था को ध्वस्त होते देखने की कामना रखता है।

4.4 शिल्प-सौंदर्य

'वह तोड़ती पत्थर' प्रगतिवादी रचना है। शिल्प-सौंदर्य की दृष्टि से यह रचना अद्भुत है। सर्वप्रथम तो कविता के छंद पर ध्यान दीजिए। परंपरागत छंदों में मात्रा और वर्ण का निश्चित विधान होता है, पर निराला की अनेक कविताओं में ऐसा बंधन नहीं है। इसे 'मुक्त छंद' कहते हैं। कविता को छंद के बंधन से मुक्त करने में निराला का बड़ा योगदान है। 'वह तोड़ती पत्थर' में तुकांतता है। तुक पंक्तियों के अंत में ही नहीं भीतर भी है, पर उसका बंधन नहीं है, पंक्तियाँ छोटी-बड़ी हैं, पर उनमें प्रवाह है, जैसे –

1. *श्याम तन, भर बँधा यौवन,*
   नत नयन प्रिय-कर्म-रत-मन

   गुरु हथौड़ा हाथ,
   करती बार-बार प्रहार

2. *चढ़ रही है धूप;*
   गर्मियों के दिन
   दिवा का तमतमाता रूप;

कवि शब्दों के द्वारा पाठक के सामने एक चित्र-सा खींच देता है; जैसे –

कोई न छायादार
पेड़ वह जिसके तले बैठी हुई स्वीकार;
श्याम तन, भर बँधा यौवन,
नत नयन, प्रिय-कर्म-रत मन,
गुरु हथौड़ा हाथ,
करती बार-बार प्रहार
सामने तरुमालिका, अट्टालिका, प्राकार।

शब्द-प्रयोग में भी कवि ने बड़ी कुशलता का परिचय दिया है। 'श्याम तन, भर बँधा यौवन', कम शब्दों से अधिक गूढ़ अर्थ का संकेत करना निराला की विशेषता है। जैसे- *'देखा मुझे उस दृष्टि से जो मार खा रोई नहीं', 'मैं तोड़ती पत्थर'*, 'आदि ऐसे ही प्रयोग हैं। निराला जिस युग में कविता कर रहे थे, उसमें प्रायः संस्कृतनिष्ठ शब्दावली के प्रयोग का चलन-सा हो गया था। प्रसाद, पंत, महादेवी आदि की भाषा तत्समप्रधान है, पर निराला का भाषा पर ऐसा अधिकार है कि वे संस्कृतनिष्ठ और सरल हिंदी के शब्दों का प्रयोग आवश्यकतानुसार कर लेते हैं। 'वह तोड़ती पत्थर' कविता की भाषा बड़ी ही सरल और बोलचाल की है। परंतु इसमें भी कवि समाज की सुख-सुविधाएँ भोगने वालों की बात करते समय तत्सम शब्दावली का प्रयोग करता है - तरुमालिका, अट्टालिका, प्राकार।

पाठगत प्रश्न 4.4

सर्वाधिक उपयुक्त विकल्प चुनकर पूछे गए प्रश्नों के उत्तर दीजिए :

1. कवि की समानुभूति किसके साथ है-

   (क) व्यवस्था के (ख) शोषित के

   (ग) शोषक के (घ) परिस्थितियों के

2. 'वह तोड़ती पत्थर' कविता में नहीं है-

   (क) छंद का बंधन (ख) प्रवाह

   (ग) गूढ़ार्थ (घ) सरल भाषा

(ख) जयशंकर प्रसाद

जयशंकर प्रसाद छायावादी युग के श्रेष्ठ कवि हैं। इनकी कविताओं में वैयक्तिक अनुभूति, संस्कृति और राष्ट्र-प्रेम की अभिव्यक्ति प्रभावशाली ढंग से हुई है। इसलिए हिंदी कविता के इस युग को 'नवजागरण' का युग कहा जाता है। इनके 'चंद्रगुप्त' नाटक की गिनती हिंदी के श्रेष्ठतम नाटकों में होती है। जिस गीत 'हिमाद्रि तुंगशृंग से'... को आप पढ़ने जा रहे हैं, वह इसी नाटक के चौथे अंक से लिया गया एक प्रयाण गीत है। युद्ध में विजय प्राप्त करने

चित्र 4.3 : जयशंकर प्रसाद

के लिए उत्साह के भाव का होना आवश्यक होता है। उत्साह की अभिव्यक्ति अथवा उत्साह बढ़ाने के लिए गाया जानेवाला सामूहिक गीत 'प्रयाण' अथवा 'प्रस्थान गीत' कहा जाता है। आइए, इस गीत को समझते हैं।

4.5 मूल पाठ

हिमाद्रि तुंग शृंग से
प्रबुद्ध शुद्ध भारती–
स्वयं प्रभा समुज्ज्वला,
स्वतंत्रता पुकारती–
"अमर्त्य वीरपुत्र हो, दृढ़-प्रतिज्ञ सोच लो,
प्रशस्त पुण्य पंथ है - बढ़े चलो बढ़े चलो।।"

असंख्य कीर्तिरश्मियाँ
विकीर्ण दिव्यदाह-सी।
सपूत मातृभूमि के–
रुको न शूर साहसी!
अराति सैन्य सिंधु में– सुवाडवाग्नि से जलो,
प्रवीर हो जयी बनो– बढ़े चलो बढ़े चलो।

बोध प्रश्न 4.2

सर्वाधिक उपयुक्त विकल्प चुनकर पूछे गए प्रश्नों के उत्तर दीजिए :

1. प्रस्तुत पंक्तियों में पुकारने वाला कौन है–

   (क) हिमालय (ख) स्वतंत्रता

   (ग) भारती (घ) वीरपुत्र

2. प्रस्तुत पंक्तियों में 'अमर' कहा गया है–

   (क) वीरपुत्रों को (ख) वीरों को

   (ग) दृढ़ता को (घ) भारती को

4.6 आइए समझें

अंश-1

हिमाद्रि तुंग श्रृंग .... बढ़े चलो।

प्रसंग—'चंद्रगुप्त' नाटक में यवनों से देश की रक्षा के लिए संग्राम छिड़ा हुआ है। भारतीयों में कर्त्तव्य की प्रेरणा जगाने के लिए नाटक की नायिका अलका इस गीत को समूह में गाती है। इस गीत का एक प्रसंग और है। जयशंकर प्रसाद ने इसकी रचना देश को अंग्रेजी शासन से मुक्त कराने की कामना से की थी।

व्याख्या— नाटक की पात्र अलका के माध्यम से कवि का कथन है कि हिमालय पर्वत की ऊँची चोटी से ज्ञान एवं सत्यता की देवी माँ भारती स्वतंत्रता की पुकार कर रही हैं। आप जानते हैं कि हिमालय पर्वत प्राचीन काल से ही भारत के रक्षक के रूप में देखा जाता रहा है। इसलिए यहाँ पर हिमालय की ऊँची चोटी से भारती का पुकारना सार्थक है। गीत में आगे कहा गया है कि भारतमाता स्वयं अपने प्रकाश पुंज से प्रकाशित हैं, उनमें एक विशेष आभा है। वे आह्वान कर रही हैं— हे भारतवासियो! तुम अमर वीरों की संतान हो। अत: तुम कभी पराजित नहीं हो सकते। तुम्हारा इतिहास वीरता का इतिहास रहा है। तुम आज अपनी मातृभूमि को स्वतंत्र कराने का दृढ़ संकल्प लो। यह निश्चय कर लो कि इसके लिए तुम अथक संघर्ष करते रहोगे। यही तुम्हारा परम कर्त्तव्य है। मनुष्य के लिए कर्त्तव्य का मार्ग ही सर्वश्रेष्ठ मार्ग होता है। अत: संघर्ष के इस पावन मार्ग पर तुम अपने कदम निरंतर बढ़ाते चलो। आप समझ गए होंगे कि गीत में मातृभूमि का मानवीकरण किया गया है। वह देश के वीरों का स्वतंत्रता के लिए आह्वान कर रही है और अमर वीरों की संतान कहकर उनका उत्साह बढ़ा रही है।

टिप्पणी

(i) 'हिमाद्रि तुंग श्रृंग' अर्थात् भारतमाता हिमालय की ऊँची चोटी से स्वतंत्रता की पुकार कर रही है। यह कल्पना बड़ी सार्थक है, क्योंकि यहाँ से समूचा देश उनकी पुकार सुन सकता है। जब यह गीत रचा गया तब भारतभूमि का रक्षक हिमालय भी परतंत्रता की बेड़ियों में जकड़ा हुआ था।

(ii) माँ भारती ज्ञान और बुद्धि की देवी हैं। वे भारतवासियों में भी इन गुणों को प्रदान करती है और उनके भीतर कर्त्तव्य का बोध कराती है।

(iii) आज के संदर्भ में भी इस गीत का अर्थ किया जा सकता है। वर्तमान युग में भी देश अनेक प्रकार की समस्याओं से घिरा हुआ है। भारतीयों का यह कर्त्तव्य है कि वे देश की पुकार को सुनें और अनेक समस्याओं से देश को मुक्त कराने का प्रयास करें।

टिप्पणी

शब्दार्थ

हिमाद्रि – हिमालय पर्वत
तुंग श्रृंग – ऊँची चोटी
प्रबुद्ध – जागृत, ज्ञानी
शुद्ध – पवित्र, स्वच्छ
भारती – भारतमाता, माँ सरस्वती
स्वयंप्रभा - अपने ही प्रकाश से प्रकाशित
समुज्ज्वला- विशेष प्रकार से आलोकित
अमर्त्य- दिव्य, अनश्वर
दृढ़ प्रतिज्ञ- प्रतिज्ञा से न टलने वाला, दृढ़ निश्चयी
प्रशस्त-श्रेष्ठ, उत्तम, पुण्य पंथ-पावन मार्ग
असंख्य-अनगिनत
कीर्ति रश्मियाँ–प्रसिद्धि अथवा ख्याति की किरणें
विकीर्ण–फैली हुई
दिव्य दाह-सी-अलौकिक ज्वाला अथवा मशाल के समान
शूर-श्रेष्ठ योद्धा
अराति-शत्रु
सिंधु-सेना रूपी समुद्र
सुवाडवाग्नि- समुद्र की आग
प्रवीर- वीर, योद्धा
जयी-विजयी

(iv) गीत में दृढ़ प्रतिज्ञ होने की बात की गई है। दृढ़ प्रतिज्ञा अर्थात् दृढ़तापूर्वक निश्चय करना सफलता का पहला चरण है। संघर्ष चाहे कितना भी कठिन हो परंतु दृढ़ प्रतिज्ञा से विजय प्राप्त की जा सकती है।

(v) गीत में तत्सम शब्दों के प्रयोग से सहज सौंदर्य की वृद्धि हुई है; जैसे- हिमाद्रि, तुंग शृंग, स्वयंप्रभा, समुज्ज्वला आदि।

(vi) जयशंकर प्रसाद द्वारा लिखित नाटक 'चंद्रगुप्त' के चतुर्थ अंक में यवनों को देश से निष्कासित करने के लिए सभी देशवासी तत्पर हैं। अलका तक्षशिला की राजकुमारी है। वह राष्ट्रप्रेम और राष्ट्रसेवा की साक्षात् मूर्ति है। 'चंद्रगुप्त' की अलका उस भारतीय नारी का प्रतीक है जो अपनी मातृभूमि को बचाने के लिए अपना सर्वस्व बलिदान कर सकती है। देशभक्ति से प्रेरित भारतीयों का एक समूह आगे बढ़ रहा है। इस समूह का नेतृत्व अलका कर रही है। जनसमूह में कर्त्तव्य-निष्ठा का भाव भरने के लिए वह इस गीत को गाती है और उसके साथ सभी मिलकर गाते हैं।

पाठगत प्रश्न 4.5

सर्वाधिक उपयुक्त विकल्प चुनकर पूछे गए प्रश्नों के उत्तर दीजिए :

1. ''बढ़े चलो, बढ़े चलो'' का आह्वान किसके प्रति किया गया है।

   (क) देशवासियों के　　(ख) वीरों के

   (ग) अमर व्यक्तियों के　　(घ) प्रबुद्ध जनों के

2. 'प्रबुद्ध शुद्ध' कौन है-

   (क) स्वतंत्रता　　(ख) भारती

   (ग) वीरपुत्र　　(घ) पुण्य पंथ

अंश-2

असंख्य कीर्तिरश्मियाँ
विकीर्ण दिव्यदाह-सी।
सपूत मातृभूमि के–
रुको न शूर साहसी!
अराति सैन्य सिंधु में–
सुबाड़वाग्नि से जलो,
प्रवीर हो जयी बनो– बढ़े चलो
बढ़े चलो।।

अंश-2 असंख्य कीर्ति.......... बढ़े चलो।

आइए, कविता के दूसरे अंश को एक बार फिर से पढ़ लें।

व्याख्या–माँ भारती देशवासियों से स्वतंत्रता की पुकार करती हैं–हे भारतवासियो! सूर्य की चमकती किरणों की तरह तुम्हारी ख्याति सभी दिशाओं में फैल रही है। तुम्हारी प्रसिद्धि की ये किरणें एक दिव्य ज्वाला (मशाल) बनकर तुम्हारा पथ प्रकाशित कर रही हैं। तुम अपनी

मातृभूमि के सच्चे सपूत हो, अतः इस स्वतंत्रता-संघर्ष में तुम्हें रुकना नहीं है। हे भारतवासियो! तुम वीर और साहसी योद्धा हो, अतः अपने कर्त्तव्य-मार्ग पर डटे रहना तुम्हारा उद्देश्य है। शत्रुओं की विशाल सेना समुद्र की तरह अथाह है। इसे उसी प्रकार पराजित करना होगा, जिस प्रकार समुद्र के भीतर की आग उसकी असीम जलराशि के भीतर रहने वाले असंख्य जीवों को जलाकर सुखा देती है। हे देशवासियो! तुम शूरवीर हो। सच्चा शूरवीर वही होता है जो मातृभूमि की रक्षा के लिए अपने प्राणों की आहुति के लिए तत्पर रहता है। इसी निष्ठा से कर्त्तव्य पथ पर तुम अपने कदम बढ़ाते चलो। तुम्हें विजय अवश्य प्राप्त होगी।

देश की स्वाधीनता के लिए हमारे पूर्वजों को एक लंबा संघर्ष करना पड़ा था। इसे प्राप्त करने के लिए असंख्य भारतीयों ने अपने प्राणों की बाजी लगा दी थी। स्वाधीनता हमारे लिए बहुमूल्य है। इसलिए इसकी एकता और अखंडता को अक्षुण्ण बनाए रखना हम सभी भारतवासियों का प्रथम कर्त्तव्य है। हमारा देश आज राजनीतिक रूप से तो स्वतंत्र है किंतु सामाजिक-आर्थिक दृष्टि से अभी भी हम पूरी तरह स्वतंत्र नहीं हैं। भूख, गरीबी, बेरोजगारी, हिंसा, भेदभाव आदि अनेक समस्याओं ने हमारे देश को आज भी जकड़ रखा है। गाँधीजी जिस स्वतंत्रता का स्वप्न देख रहे थे उसमें राजनीतिक, आर्थिक, सामाजिक और सांस्कृतिक सभी क्षेत्रों की स्वतंत्रता समाहित थी। हम सभी भारतवासियों का दायित्व है कि पूर्ण स्वतंत्रता के उनके स्वप्नों को साकार करें।

टिप्पणी

(क) यह गीत एक सर्वकालिक प्रयाण गीत है। यह नाटक मौर्यकालीन भारत के लिए जितना प्रासंगिक है उतना ही स्वतंत्रता-आंदोलन के दौर में भी था और आज भी है।

(ख) 'असंख्य कीर्ति रश्मियाँ' के द्वारा कवि ने भारतीय वीरों के गौरवशाली इतिहास की ओर संकेत किया है।

(ग) कवि ने इस गीत के माध्यम से संकेत किया है कि मातृभूमि का सच्चा सपूत वही है जो इसकी रक्षा करता है तथा इसके मान-सम्मान के लिए अपने प्राणों को भी अर्पित कर देने में पीछे नहीं हटता है।

(घ) गीत की भाषा और शब्द-चयन छायावादी भाषा-संस्कारों से प्रभावित है। यहाँ तत्सम शब्दावली का प्रयोग भावों के अनुकूल हुआ है।

टिप्पणी

पाठगत प्रश्न 4.6

सर्वाधिक उपयुक्त विकल्प चुनकर पूछे गए प्रश्नों के उत्तर दीजिए :

(1) शत्रुओं की विशाल सेना की तुलना की गई है–

(क) बड़वाग्नि से (ख) कीर्ति-रश्मियों से

(ग) समुद्र से (घ) दिलदाह से

(2) यह गीत जयशंकर प्रसाद की किस रचना से लिया गया है?

(क) ध्रुवस्वामिनी (ख) विशाखदत्त

(ग) स्कंदगुप्त (घ) चंद्रगुप्त

4.7 भाव तथा शिल्प-सौंदर्य

आपने पूरा पाठ पढ़ा। पढ़ते समय आपको यह अनुभव हुआ होगा कि देश के स्वाधीनता-आंदोलन को सफल बनाने के लिए साहित्यकार किस प्रकार राष्ट्रप्रेम से ओत-प्रोत कविताएँ लिख रहे थे। इस तरह के प्रयाण गीतों के माध्यम से कवियों द्वारा जनमानस में एक नई चेतना का संचार किया गया।

भाव-सौंदर्य

यह कविता जयशंकर प्रसाद के उदात्त राष्ट्रप्रेम का एक उदाहरण है। इस कविता के माध्यम से व्यक्ति, समाज और राष्ट्र के लिए स्वतंत्रता के महत्त्व को स्पष्ट किया गया है। यह हिंदी नवजागरण की प्रतिनिधि रचनाओं में से एक है। कविता की पंक्तियों से यह स्पष्ट है कि स्वतंत्रता का अपना ही एक प्रकाश होता है जिससे समाज और देश को एक नई ऊर्जा सही दिशा प्राप्त होती है। उस युग में भारतीयों के लिए पराधीनता से बड़ा कोई दु:ख नहीं था। कवि प्रसाद ने समूचे देश को पराधीनता से उबरने का संदेश देने का प्रयत्न किया है।

शिल्प-सौंदर्य

कविता में तत्सम शब्दावली का प्रयोग है यह छायावादी काव्यभाषा की सबसे बड़ी विशेषता थी। भाषा तत्सम प्रधान होते हुए भी भावों को पूरी सहजता के साथ व्यक्त करने में सफल हुई है। कविता की भाषा ओजगुण से युक्त है। योद्धाओं और जनमानस में उत्साह बढ़ाने के लिए इस प्रकार की भाषा का प्रयोग आवश्यक होता है। 'प्रशस्थ पुण्य-पंथ है' में 'प' वर्ण

की आवृत्ति के कारण अनुप्रास अलंकार का सौंदर्य है। जहाँ उपमेय की उपमान से समानता के आधार पर तुलना की जाती है, वहाँ उपमा अलंकार होता है। इस प्रकार 'विकीर्ण दिव्य दाह-सी' एवं 'सुबाड़वाग्नि से जलो' में उपमा अलंकार का सुंदर प्रयोग हुआ है। जहाँ गुणों की समानता के आधार पर उपमेय में उपमान का आरोप किया जाता है, अर्थात् दोनों में अभिन्नता दिखायी जाती है, वहाँ रूपक अलंकार होता है। शत्रुओं की सेना में समुद्र का आरोप होने के कारण 'अराति सैन्य-सिंधु, में रूपक अलंकार का सौंदर्य है। संगीतात्मकता और चित्रात्मकता जयशंकर प्रसाद की काव्यभाषा की विशेषता है। संगीत की दृष्टि से भी यह गीत एक श्रेष्ठ गीत है और दृश्य-विधान की दृष्टि से भी इसकी रचना सामूहिक गायन के लिए की गई है।

4.8 आपने क्या सीखा : चित्रात्मक प्रस्तुति

छायावादी काव्य

सूर्यकांत त्रिपाठी निराला

भाव-सौंदर्य

श्रमिक स्त्री के माध्यम से शोषितों का चित्रण

समानुभूति की अभिव्यक्ति

शिल्प-सौंदर्य

मुक्त छंद

सरल बोलचाल की भाषा

कहीं-कहीं तत्सम शब्द

जयशंकर प्रसाद

भाव-सौंदर्य

'चंद्रगुप्त' नाटक से लिया गया प्रयाण गीत

स्वतंत्रता की प्रेरणा

गौरवशाली इतिहास का उल्लेख

शिल्प-सौंदर्य

मातृभूमि की रक्षा करना हमारा कर्त्तव्य

छायावादी भाषा

4.9 सीखने के प्रतिफल

- पाठ्य-सामग्री में शामिल रचनाओं के साथ ही इतर रचनाओं-कविता, कहानी, एकांकी और समाचारपत्र पढ़ते हैं।
- विभिन्न साहित्यिक विधाओं को पढ़ते हुए उनके सौंदर्य पक्ष एवं व्याकरणिक संरचनाओं पर चर्चा करते हैं।

- हिंदी भाषा एवं साहित्य की परंपरा की समझ लिखकर, बोलकर एवं विचार-विमर्श के माध्यम से अभिव्यक्त करते हैं।
- भाषायी अभिव्यक्ति के विभिन्न माध्यमों से राष्ट्र के प्रति लगाव को अभिव्यक्त करते हैं।

4.10 योग्यता विस्तार

सूर्यकांत त्रिपाठी 'निराला'

श्री सूर्यकांत त्रिपाठी 'निराला' का जन्म सन् 1899 में तत्कालीन बंगाल के मेदिनीपुर जिले के एक छोटे राज्य में हुआ था, जिसका नाम था – महिषादल। उनकी प्रारंभिक शिक्षा घर पर ही हुई। कुछ ही वर्षों के वैवाहिक जीवन के बाद उनकी पत्नी का निधन हो गया। परिवार में और भी अनेक संकट आए। कविता लिखने की उनकी शैली नई थी और संपादक प्रारंभ में उनकी कविता छापते नहीं थे। अत: उनके जीवन में आर्थिक अभाव भी बने रहे। अपने संघर्षपूर्ण जीवन के अनुभवों के कारण निराला ऐसे लोगों के दु:ख को अपना बना लेते हैं जो शोषित एवं अभावग्रस्त हैं। निराला संस्कृत, बांग्ला और अंग्रेज़ी भाषा के ज्ञाता थे तथा संगीत और दर्शन में भी उनकी रुचि थी। वे रूढ़ियों के विरोधी थे। उन्होंने हिंदी कविता को नया जीवन और नया मार्ग दिया। 'परिमल', 'अनामिका', 'तुलसीदास', 'नये पत्ते, 'राम की शक्ति पूजा', 'गीतिका' आदि उनकी प्रसिद्ध रचनाएँ हैं। सन् 1961 में उनका निधन हो गया।

जयशंकर प्रसाद

छायावादी कविता के विकास में जयशंकर प्रसाद का विशिष्ट योगदान है। उनका जन्म 1889 ई. में काशी के एक संपन्न वैश्य परिवार में हुआ था। इनके पूर्वज 'सुंघनी साहु' के नाम से पूरे नगर में प्रसिद्ध थे। जयशंकर प्रसाद ने सातवीं कक्षा तक विद्यालय जाकर औपचारिक शिक्षा प्राप्त की थी। इसके बाद संस्कृत, हिंदी, उर्दू, अंग्रेज़ी आदि अनेक भाषाओं का ज्ञान उन्होंने घर पर रहकर ही प्राप्त किया। कवि प्रसाद आरंभ में ब्रजभाषा में ही कविताएँ लिखते थे। ब्रजभाषा में इन्होंने 'कलाधर' उपनाम से कविताएँ लिखीं। बाद में उन्होंने महावीर प्रसाद द्विवेदी से प्रेरित होकर खड़ी बोली में लिखना आरंभ किया। जयशंकर प्रसाद की शुरुआती दौर की रचनाओं का संकलन 'चित्राधार' है। उन्होंने 1914 ई. में 'महाराणा का महत्त्व' शीर्षक खंडकाव्य की रचना की थी। इससे पहले 1913 ई. में 'करुणालय' का प्रकाशन हो चुका था। जयशंकर प्रसाद का पहला छायावादी काव्यग्रंथ 'झरना' 1918 ई. में प्रकाशित हुआ। आगे चलकर छायावाद का विकास 'आँसू' (1925), 'लहर' (1933) और 'कामायनी' (1935) में देखने को मिला।

काव्य-रचनाओं के अतिरिक्त प्रसाद की ख्याति का आधार उनके ऐतिहासिक नाटक हैं। इन नाटकों में उनकी राष्ट्रीय-सांस्कृतिक चेतना प्रमुखता से व्यक्त हुई है। 'चंद्रगुप्त' नाटक देशप्रेम

की दृष्टि से उत्कृष्ट नाटक है। इस नाटक में दो बड़े मोर्चों पर भारतीयों के संघर्ष का वर्णन हुआ है। एक, विदेशी आक्रमणकारियों के विरुद्ध और दूसरा, विदेशी सत्ता के विरुद्ध। जयशंकर प्रसाद एक श्रेष्ठ कथाकार भी थे। उनका निधन 1937 ई. में हुआ।

4.11 पाठांत प्रश्न

1. 'वह तोड़ती पत्थर' कविता का केंद्रीय भाव क्या है ?
2. 'वह तोड़ती पत्थर' कविता के आधार पर शोषक और शोषित के जीवन का अंतर स्पष्ट कीजिए।
3. 'वह तोड़ती पत्थर' कविता के आधार पर ग्रीष्म ऋतु की भीषणता का वर्णन कीजिए।
4. आपने भी अनेक श्रमिकों को काम करते देखा होगा। किसी श्रमिक को मेहनत करते हुए देखकर आप कैसा महसूस करते हैं? उल्लेख कीजिए।
5. सप्रसंग व्याख्या स्पष्ट कीजिए :

   (क) श्याम तन, भर बँधा यौवन,
   नत नयन प्रिय-कर्म-रत मन,

   गुरु हथौड़ा हाथ,
   करती बार-बार प्रहार,
   सामने तरु-मालिका, अट्टालिका, प्राकार।

6. 'वह तोड़ती पत्थर' कविता के शिल्प-सौंदर्य पर टिप्पणी लिखिए।
7. प्रसाद की कविता में 'स्वयंप्रभा' एवं 'समुज्ज्वला' किसे कहा गया है?
8. 'असंख्य कीर्ति रश्मियाँ विकीर्ण दिव्य दाह-सी' का आशय स्पष्ट कीजिए।
9. 'प्रयाण गीत' किसे कहा जाता है?
10. वर्तमान समय में राष्ट्र के प्रति आपका क्या कर्त्तव्य है? अपने देश की सेवा आप किस प्रकार से कर सकते हैं?
11. यह कविता आज के संदर्भ में आपको किस प्रकार की प्रेरणा देती है? अपने शब्दों में स्पष्ट कीजिए।
12. 'हिमाद्रि तुंग शृंग से' कविता की भाषा की दो विशेषताएँ लिखिए।

4.12 उत्तरमाला

बोध प्रश्नों के उत्तर 4.1

1. (ग)

2. (क)

3. (क)

पाठगत प्रश्नों के उत्तर

4.1 1. (ग) 2. (घ)

4.2 1. (घ) 2. (ग)

4.3 1. (ग) 2. (घ)

4.4 1. (ख) 2. (क)

4.5 1. (क) 2. (ख)

4.6 (1) ग (2) घ

बोध प्रश्नों के उत्तर 4.2

1. (ख)

2. (क)